पंचम अध्याय

मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ

5.1 भूमिका

5.2 समस्याएँ

5.2.1 पारिवारिक विघटन की समस्या

5.2.2 कामकाजी नारी की समस्या

5.2.3 अशिक्षित तथा शिक्षित नारी की समस्या

5.2.4 घुटन और अकेलेपन की समस्या

5.2.5 प्रौढ़ अविवाहिता की समस्या

5.2.6 कन्याजन्म की समस्या

5.2.7 निसंतान नारियों की समस्या

5.2.8 दहेज की समस्या

5.2.9 पति द्वारा पीड़ित नारी की समस्या

5.2.10 आर्थिक समस्या

5.2.11 वैद्यकीय सुविधाओं के अभाव की समस्या

5.2.12 असफल प्रेम की समस्या

5.2.13 यौन शोषण की समस्या

5.2.14 अवैध यौन संबंध की समस्या

निष्कर्ष -

संदर्भ-सूची

5.1 भूमिका -

मनुष्य जीवन के साथ ही समस्या यह शब्द जुड़ा हुआ है । जीवन को समस्याओं से पृथक नहीं किया जा सकता । समस्याओं से जूझते हुए ही वह अंत में लक्ष्य तक पहुँचता है । इसलिए संघर्ष का दूसरा नाम ही जीवन है । आज का युग विषमताओं और समस्याओं का युग है । सृजनकार जीवन की विविध समस्याओं से प्रभावित रहता है । अपनी रचनाओं में भी वह उनसे प्रभावित दिखाई देता है । जीवन की विविध समस्याओं का उद्‌घाटन और उसका हल यद्‌यपि हर समय संभव नहीं होता, फिर भी आज के कहानीकार का प्रधान प्रयोजन जीवन की जटिलताओं का चित्रण करना रहा है ।

मृदुला गर्ग की कहानियों में भी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का चित्रण हुआ है । उनमें अधिकतर नारी संबंधी समस्याओं की मात्रा अधिक है। आज की नारी के सम्मुख जो समस्याएँ दृष्टिगत होती हैं, उनमें से अनेक आज से शताब्दियों पूर्व भी थीं । किंतु तब की नारी के लिए वे समस्याएँ, समस्याएँ न होकर नारी धर्म था । आज की नारी के बारे में किरणबाला अरोड़ा लिखती हैं, '' आज की नारी प्राचीन काल की नारी से अधिक प्रबुद्‌ध है और उसमें अपने अधिकारों के प्रति एक चेतना जागृत हुई है । वह अपनी समस्याओं के प्रति भी जागरूक दिखाई देती है । ''[1]

5.2 समस्याएँ -

साठोत्तरी हिंदी कथासाहित्य में नारी के जीवन को ग्रस्त करनेवाली अनेकानेक समस्याएँ उभर कर आई हैं । मृदुला गर्ग की कहानियों में भी नारी जीवन से संबंधित विविध समस्याएँ चित्रित हैं । डॉ. बिपिनबिहारी ठाकुर मृदुला गर्ग के बारे में लिखते हैं, '' उनकी कथा कृतियों में आधुनिक नगरीय सभ्यता के परिपार्श्व में व्यक्ति मन की अनुभूतियों और संवेदनाओं की बड़ी सूक्ष्म व्यंजना हुई । उन्होंने मुख्य रूप से नारी-जीवन की स्थितियों और समस्याओं के अंकन पर अपनी दृष्टि केंद्रित की है । ''[2]

मृदुला गर्ग की कहानी संग्रहों में भारतीय परिवेश में नारी ज़ीवन के बहुरंगी रूपों का चित्रण हुआ है । मृदुला गर्ग के ' शहर के नाम ' और ' ग्लेशियर से ' इन दो कहानीसंग्रहों में निम्नांकित नारी समस्याओं का चित्रण मिलता है -

1. पारिवारिक विघटन की समस्या।
2. कामकाजी नारी की समस्या ।
3. अशिक्षित तथा शिक्षित नारी की समस्या ।
4. घुटन और अकेलेपन की समस्या ।
5. प्रौढ़ अविवाहिता की समस्या ।

माता-पिता इस दुनिया में नहीं रहते, तब उसके भैय्या-भाभी भी उससे दूर हो जाते हैं और तब वह अकेली हो जाती है । वह कहती है, " पर देखते-देखते दस साल बीत गये । पैसे जमा करना इतना आसाम था क्या ! इस बीच माँ-पिताजी दोनों स्वर्ग सिधार गये, भाई-भाभी ने मुँह फेर लिया । अकेली जान मैं, कहाँ पैसा बचाती, कितना पेट काटती । "[13] और तब अपना अकेलापन दूर करने के लिए वह उस हरी आँखोंवाले आदमी के तलाश में युरोप तक जा पहुँचती है ।

मृदुला गर्ग के ' झूलती कुर्सी ' और ' खाली ' इन कहानियों में भी अकेलेपन की समस्या को चित्रित किया है । ' झूलती कुर्सी ' की शेफाली इंडियन एयरलाइंस में नौकरी करती है । वह एक युवक से प्रेम करती है, लेकिन वह भी उसका साथ नहीं देता । उसके इंतजार में रैम्बल में वह अपने आप को अकेली महसूसू करती है । ' खाली ' कहानी की निर्मला भी परिवार में पति बच्चों के होते हुए भी अकेली है । इसलिए कहती है, " पति और तीनों लड़के सुबह दफ्तर-कालेज में चले जाते हैं, तो सारा दिन वह घर में अकेली रह जाती है । खाली समय काटने को दौड़ता है । शाम को वह लौटते हैं, तो अपने-अपने अनुभव लेकर और अपने-अपने संवाद । "[14]

5.2.5 प्रौढ़ अविवाहिता की समस्या -

अतिप्राचीन काल से समाज में परिवार के अस्तित्व के लिए विवाह को एक अनिवार्य संस्था के रूप में स्वीकार किया गया है, वह एक सामाजिक समझौता है । विवाह के बारे में प्रेमचंद लिखते है, " यह कच्चे धागे का कंगन पवित्र धर्म की हथकड़ी है, जो कभी हाथ से न निकलेगी और मंडप उस प्रेम और कृपा की छाया का स्मारक है, जो जीवन पर्यन्त सिर से न उठेगी ।"[15]

प्रत्येक देश, जाति और धर्म के लोगों के विवाह के संबंध में अपने-अपने नियम, कानून, प्रथा, रीति-रिवाज, परंपराएँ होती हैं । इन्ही परंपराओं के कारण अनेक समस्याओं का निर्माण होता है ।

अविवाह की समस्या को हम दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते है । प्रथम वे युवक-युवतियाँ जो विवाह संस्था का विरोध करते हुए स्वयं अविवाहित रहते हैं, और दूसरे वे युवक-युवतियाँ जो विवाह की इच्छा रखते हुए भी कुछ असाधारण परिस्थितियों के कारण अविवाहित रह जाते हैं । महिला कहानीकारों ने ' स्त्री ' होने के नाते विशेष रूप से विवाह संबंधी समस्याओं का अंकन सूक्ष्मता से अपने कहानीसंसार में किया है । व्यक्तिवाद की भावना, पश्चिमी सभ्यता एवं आधुनिक शिक्षा ने विवाह संस्था की जड़ें हिला दी हैं । आज विवाह मात्र एक समझौता, साथ रहने की आवश्यकता भर समझा गया है । इसलिए वर्तमान युग में विवाह को एक निरर्थक बंधन के रूप में मानने की प्रवृत्ति समाज में पनप र है ।

मृदुला गर्ग ने उनकी ' अक्स ' इस कहानी में अविवाह की समस्या का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है । इस कहानी की नायिका कहती है, '' सब कहते हैं जिंदगी तबाह कर ली मैंने । जानते हैं क्यों ? शादी नहीं की । हिंदुस्तानी औरत हूँ कोई मज़ाक है । कितने लोग आये मुझे देखने । सजधजकर बैठा की मैं उनके सामने । वे तका किये घूर-घूरकर मुझे और मैं ढूँढ़ा की एक मुस्कराहट उनकी आँखों में ।''[16]

मृदुला गर्ग की ' तुक ' कहानी भी विवाह और प्रेम को पूर्ण असंगत और व्यर्थ सिद्ध करती है । इस कहानी की नायिका मीरा स्वयं को उन बेवकूफ औरतों में से एक मानती है, जो अपने पति को प्यार करती हैं । दूसरे वह पति और विवाह-संस्था दोनों को ही एक अतिशय घृणास्पद स्थिति से देखती है,''पति का होना उनके लिए एक तरह का व्यवसाय है, जिसके माध्यम से उन्हें पैसा और व्यस्तता, दोनों मिलते हैं ।''[17]

मृदुला गर्ग की और एक कहानी ' ग्लेशियर से ' में भी श्यामला पुरी की बातों से थी यही लगता है, कि वह विवाह को एक निरर्थक बंधन मानती है । - '' हर औरत के लिए मुनासिब नहीं है कि वह अपने से एक चौथाई दिमागवाले आदमी से शादी करके उम्र-भर उसके कहे जुमले दुहराती हुई जिये जो उसने बासी किताबों से चुराये हों ।''[18]

' झुलती कुर्सी ' की शेफाली भी विवाह करना चाहती है, लेकिन उसका प्रेमी उसका साथ नहीं दे रहा और इसलिए पढ़ी-लिखी होकर भी अब तक वह अविवाहित है । शेफाली इंडियन एयरलाइन्स में नौकरी करती है । उसके कॉलेज की सभी सहेलियों की शादीयाँ हो चुकी हैं । इस तरह ' खरीदार ' कहानी की नीना भी ए. सी. (सहायक कमिशनर) पद पर काम करती हैं । लेकिन अब तक वह अविवाहित है । उसके माता-पिता दहेज देकर उसकी शादी करना चाहते है, लेकिन उसे यह पसंद नहीं था, इसलिए वह अविवाहित है ।

5.2.6 कन्याजन्म की समस्या -

विश्वविद्यालयों, कॉलेजों में, सहशिक्षा, स्त्री शिक्षा, महिलाओं के अन्य अनेक साहसिक कार्यों, महिला आंदोलनों, नारी मुक्ति संस्थाओं के सौजन्य से समाज में नारियों की स्थिति सुधर रही है, फिर भी आज समाज में कन्याजन्म पाप समझा जाता है । जिस परिवार में कन्या का जन्म होता है, वहाँ या तो मातम मनाया जाता है, या पुत्री को हमेशा के लिए खदेड़ दिया जाता है । पुत्री को जन्म देनेवाली स्त्री को विविध यातनाएँ सहन करनी पड़ती हैं । सास-ससुर, उसका पति कन्या जन्म के लिए उस स्त्री को जिम्मेदार ठहराकर उस पर अत्यधिक अत्याचार किए जाते हैं । मृदुला गर्ग की ' तीन किलो की छोरी '

कहानी में बेटी के जन्म पर किया गया कथन कन्याजन्म की हिकारत को स्पष्ट करता है - '' मरने दे हरामजादी को, ... हरामखोर, हमें पता था तीसरी भी छोरी जनेगी कमजात । डाल परे कमबखत को । मरे तो अपने भाग से, जिए तो अपने भाग से । ''[39] आज स्त्रियाँ पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर अंतराल तक पहुँच गई हैं, लेकिन फिर भी आज उसका जन्म एक समस्या बन जाता है ।

5.2.7 निसंतान नारियों की समस्या -

नारी के वैवाहिक जीवन में 'मातृत्व ' के लिए बहुत उच्चतम स्थान है । संतान के बिना नारी का जीवन अधूरा लगता है । समाज को बनाए रखने के लिए, अपने घराने की वंश-वृद्धि के लिए संतान प्राप्ति आवश्यक है । घर में संतान आने की सुखद कल्पना ही सारे परिवार को खुशहाल बना देती है । कभी-कभी दुर्भाग्यवश नारी को संतान सुख नहीं मिलता, तो उसके घरवाले, रिश्तेदार, पास-पड़ोस के सभी उसकी निंदा करने लगते हैं । समाज में पग-पग पर नि:संतान नारी को अवहेलना सहनी पड़ती है । मृदुला गर्ग ने नारी के जीवन की इसी विडंबना को अपनी ' बाहरीजन ' कहानी के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया है ।

' बाहरी जन ' शीर्षक कहानी की नायिका नंदिनी के जीवन की विडंबना यह है कि, सात वर्षों के दाम्पत्य जीवन के बावजूद वह संतानहीनता के अभाव से पीड़ित है, और इसलिए उसके सास एवं ससुर राजेश्वर उस पर ऑपरेशन करा लेने के लिए दबाव डाल रहे हैं । उसकी सास सरिता भी उनकी इस धारणा का समर्थन करती है, किंतु नंदिनी बच्चे के जन्म के लिए चिकित्सा के जरिए अप्राकृतिक प्रक्रिया का इस्तेमाल करने के पक्ष में नहीं है । इस स्थिति में वह अपने को विवश नहीं मानना चाहती,'' बेचारी । नहीं, बेचारी नहीं । नहीं चाहिए उसे बच्चा । नहीं जाएगी वह डॉक्टरों के पास । नहीं करेगी किसी अप्राकृतिक प्रक्रिया का इस्तमाल । उसकी गोद है, भरे या न भरे निर्णय लेने का अधिकार उसका है, सिर्फ उसका । ''[20] इस तरह नंदिनी को संतान प्राप्ति न होने के कारण उसके सास-ससुर की कडुए बातों को झेलना पड़ता है ।

5.2.8 दहेज की समस्या -

लड़की के विवाह के समय दहेज देने की प्रथा बहुत पुरानी है । प्राचीन काल में दहेज देना कुप्रथा न होकर एक निर्दोष हानिरहित रिवाज था । लेकिन आज वह शोषण का एक ढंग बन गया है । लड़के का पिता अपने लड़के का मूल्य माँगता है । हर कन्या विवाह से पूर्व एक तरह की कुण्ठा अपने भीतर ढोती है । इस कुप्रथा के कारण आज हर लड़की अपने स्वाभिमान पर एक प्रश्न चिह्न पाती है । आज की शिक्षित नारी अपनी ऐसी खरीद- बेच सह नहीं पाती । शीलप्रभा वर्मा के अनुसार दहेज प्रथा सती प्रथा से

और कर्जे की किस्त में निकल जाते हैं । नन्नीबेन का बच्चा दो दिन से भूखा कलप रहा था, लेकिन घर में भैंस होते हुए भी उसे दूध नहीं मिला । तब नन्नीबेन चीख पड़ती है, '' चार हजार का कर्ज हुआ खरीदने पर । हर महीने किस्त चुकानी होती है । चारे की तलाश में डोलते दिन बीत जाता है । खली खिलाने की औकात नहीं । दूध उतरेगा कैसे ? बहुत हुआ तो दो किल्लो, वह भी चार रूपये किल्लो की चिकनाईवाला । क्या करे गरीब आदमी ?'' [28] इस तरह अर्थाभाव के कारण नन्नीबेन को अपना नवजात शिशु खोना पड़ता है ।

' अनाड़ी ' इस कहानी में भी सुवर्णा नामक लड़की को अपने पिता की नौकरी छूट जाने के कारण तथा माँ को मदद करने के लिए स्कूल की पढ़ाई छोड़ नौकरानी का काम करना पड़ता है । उसे भी लगता है कि औरों की तरह वह भी स्कूल जाए, सहेलियों के साथ खेले, झूला झूले, लेकिन आर्थिक परिस्थिति के कारण उसे यह सब नसीब नहीं होता । '' आई, तीन छोड़ पाँच घर में झाडू-फटका करने लगी । साथ में सुवर्णा, भाँडे मलने को । आठ बरस की थी तब । अब तो बारह की हो चली । कित्ती तो जिंदगी बीत गयी । फिर भी मन करता है न, इस्कूल जाने को, साथ की छोकरी-सहेली से खेलने को, झूला झूलने को, बिस्कुट-दूध खाने को . . . ।'' [29] इस तरह सुवर्णा को बचपन का सुख नसीब नहीं होता ।

' संगत ' और ' वह मैं ही थी ' कहानी के माध्यम से मृदुला गर्ग ने आर्थिक समस्या को चित्रित किया है । ' वह मैं ही थी ' कहानी की नायिका उमा शादी से पहले कॉलेज में अर्थशास्त्र पढ़ाया करती थी । लेकिन शादी के बाद वह पूरी तरह से, पति मनीश पर निर्भर रहती है । उमा पटना जाकर दस-पंद्रह दिन किसी होटल में रहकर दर्द शुरू होने पर अस्पताल में भर्ति होना चाहती है । लेकिन पैसे के अभाव के कारण वह ऐसा कर नहीं पाती । लेखिका कहती हैं, '' पैसा कहाँ था, उसके पास ? जो कमाया साथ-साथ खर्च करती रही; तब आर्थिक स्वतंत्रता विलास की वस्तु थी । जो बचाया, अपनी शादी में लगा दिया, थोड़ा बहुत फिर भी बचा रहा, शादी के बाद मौज-मजे में होम कर दिया । अब वह पूरी तरह मनीश पर निर्भर थी ।'' [30] इस तरह मृदुला गर्ग ने आर्थिक समसयाओं को अपनी कुछ कहानियों में चित्रित किया है।

5.2.11 वैद्यकीय सुविधाओं के अभाव की समस्या -

स्वतंत्रता प्राप्त हुए पचास साल बीत गए फिर भी भारत की देहातों की हालत बदतर है । रोटी-कपड़ा-मकान के साथ-साथ डॉक्टरी सुविधाओं का अभाव उनके लिए मृत्यु का आमंत्रण है । मृदुला गर्ग की ' वह मैं ही थी ' कहानी में इस समस्या का जिक्र किया है, '' वे जानते ही नहीं कि उनके देश में ऐसे गाँव-कस्बे भी हैं, जहाँ डॉक्टर नहीं हैं, चिकित्सा की सुविधाएँ नहीं हैं, जहाँ हर बिमारी का इलाज

इस्पिरीन की गोली या तुलसी का काढ़ा है । दिल्ली शहर में भी लाखों लोग हैं, जो इसी कस्बाई तरीके से जीते-मरते हैं, उनके बारे में भी वे क्या जानते हैं ? उनके लिए बच्चे के जन्म में औरत का मरना बाजारू फिल्म का लटका है या सस्ते उपन्यास की गप ।'' [31] ऐसे देहातों में प्रसुति के समय स्त्रियों की मृत्यु आम बात हो गई है । इससे स्त्रियों के प्रति समाज की दृष्टि से नारी का मूल्य क: पदार्थ है । जजकी करने के लिए कोई लेडी डॉक्टर होनी चाहिए इसी बात को मानने के लिए देहाती आदमी तैयार नहीं है, क्योंकि बच्चा जनवाने का काम दाई करती है । '' हाँ, जच्चा-बच्चा की मृत्यु दर काफी ज़्यादा है । पर क्या किया जाए, गँवई गाँव का यही हाल है अपने देश में ।'' [32] जब तक गाँव-गाँव तक शिक्षा-दीक्षा का प्रचार नहीं होता है, स्वास्थ्य की दृष्टि से डॉक्टरी सुविधाओं का होना कितना जरूरी है यह देहात के लोगों के समझ में नहीं आता तब तक गाँव का सुधार होना कठिन हैं ।

' तीन किलो की छोरी ' इस कहानी में भी देहाती वैद्यकीय असुविधाओं का चित्रण दिखाई देता है । इस कहानी में शारदाबेन यह गाँव में दाई का काम करती है । इस कहानी में भी डॉक्टरी इलाज या वैद्यकीय सुविधाओं का अभाव दिखाया है ।

5.2.12 असफल प्रेम की समस्या -

परिवार का आधार प्रेम है तथा समाज का आधार परिवार है । व्यक्ति एक दूसरे से स्नेह के कारण जीवन को कठोरता एवं मानसिक तनाओं से मुक्ति पाकर अपना जीवन सुकर तथा सुलभ बनाता है । प्रेम के अर्थ में बहुत गहराई है । प्रेम मानसिक एवं आत्मिक भावना है । स्त्री-पुरुष का एक-दूसरे के प्रति जो आकर्षण है वह प्राकृतिक है । अत: '' प्रकृति का सामंजस्य ही प्रेम का आकर्षण है । '' [33] सच्चे प्यार में त्याग की भावना रहती है । प्रेमियों की हमेशा यह कामना रहती है कि अपने प्रिय के जीवन के हर मोड़ पर अपने प्रिय का साथ निभाएँ तथा भौतिक और अध्यात्मिक दोनों स्तरों पर उसका साझीदार बन जाए । नारी जिस पुरुष से सच्चे मन से प्रेम करती है, उसे ऊँचाई पर ले जाती है ।

प्रेम, जो व्यक्ति को नया जीवन देता है उससे अगर बाधाएँ उत्पन्न हो तो प्रेम जीवन का अभिशाप बन जाता है । प्रेम में बाधाएँ कई प्रकार की उत्पन्न होती हैं । जैसे - कभी स्वयं प्रेमी, प्रेम को एक समस्या बना देता है तो कभी परिस्थितियाँ या फिर परिवार के अन्य सदस्य उसे स्वीकार नहीं कर पाते । मृदुला गर्ग ने असफल प्रेम की समस्या को कुछ कहानियों में चित्रित करते हुए उसमें यथार्थता को अग्रणी रखा है ।

' विलोम ' कहानी की नायिका एक युवक से प्रेम करती थी । वह युवक एक दिन उसे छोड़कर बिहार के दुमका जिले में किसी गाँव के बँधुआ मजदूरों के साथ रहकर उनकी समस्याओं को समझने के

लिए उन्हें उनका हक दिलाने के लिए चला जाता है । वह वापस नहीं आता है । एक साल बाद उसे पता चलता है उसे हमारी सरकार ने बिहार के किसी इलाके से गिरफ्तार किया है । फिर पाँच साल बाद अखबार में खबर पढ़ती है कि रिहा कर पुलिस के पहरे में देश छोड़कर जाने के लिए उसे मजबूर किया है । इस कहानी की नायिका उसे इतना प्रेम करती थी कि उसके लिए कुछ भी करने को तैयार थी । लेकिन अंत में उसका प्रेम सफल नहीं बन पाता और वह कहती हैं, '' जब वह मुझे छोड़कर गया, तभी मैंने अपने को समझा लिया था कि उसके जाने का एक ही कारण हो सकता था, वह यह कि भरपूर चाहने के बावजूद, वह समुद्र भर के फासले को पाटने की हिम्मत नहीं जुटा पाया था ।''[34]

'झूलती कुर्सी ' कहानी की नायिका शेफाली भी एक युवक से प्रेम करती है और अपनी बाल्कनी में बैठकर उसके आने का हमेशा इंतजार करती है । उसके कॉलेज के सभी सहेलियों की शादियाँ हो चुकी हैं । लेकिन शेफाली ने अब तक शादी नहीं की । एक दिन ऐसे ही वह एक रेस्तरे में उससे मिलने के लिए चली जाती है । वह युवक नही आता, राह देखकर वह रेस्तरे से वापस आ जाती है । उसे लगता है कि दुबारा उसका फोन आ जायेगा । वह कहती है - '' मैं सड़क पर बेतहाशा दौड़ रही हूँ . . . अपने घर की तरफ । कहीं उसका फोन दुबारा आये . . . '' [35] घर पहुँचने के बाद उसका फोन आता है, और वह उसे घर मिलने के लिए बुलाती है । इस कहानी में भी मृदुला गर्ग ने प्रेम की असफलता को चित्रित किया है ।

' होना ' इस कहानी की नायिका भी एक पुरुष से प्रेम करती है । लेकिन उन दोनों की शादी नहीं हो पाती । फिर भी दोनों एक-दूसरे को खत लिखते रहते हैं । अब दो साल हो गए हैं, उसका कोई खत नहीं आया । नायिका उसके खत का इंतजार कर रही है । वह कहती हैं, '' दो साल हो गये ये सब देखे, सुने और सूंघे । दो साल हो गये अपने इंतजार को, अचानक, हल्की सरसराहट के साथ खत्म होते महसूस किये । दो साल हो गये उस नीले लिफाफे को आये ।'' [36] इस तरह ' होना ' कहानी में भी प्रेम की असफलता को मृदुला गर्ग ने चित्रित किया है ।

5.2.13 यौन शोषण की समस्या -

पति पत्नी के जीवन का मूल आधार तृप्त कामप्राप्ति ही है । अतृप्त काम दांपत्य जीवन के विघटन का प्रमुख कारण हो सकता है । ' गृहशोभा ' मासिक में वैवाहिक जीवन में काम का महत्त्व बताते हुए रेखा राजवंशी लिखती हैं, '' विवाह जैसी संस्था का निर्माण इसलिए हुआ है, कि स्त्री और पुरुष संयम और नियमपूर्वक एक-दूसरे के साथ सेक्स का संपूर्ण आनंद ले सके और सामाजिक मर्यादाओं व नियमों का भी पालन होता रहे ।'' [37] इससे पता चलता है कि दांपत्य जीवन में तृप्त काम संबंध केवल

पति, पत्नी के लिए ही नही अपितु समाज के लिए भी महत्त्वपूर्ण है । लेकिन आज कल पति अपना गुस्सा उतारने का एक मात्र साधन के रूप में काम संबंधों को अपनाता है और इस कारण यौन शोषण की समस्या आज बढ़ती जा रही है ।

मृदुला गर्ग की ' तुक ' कहानी में यौन शोषण की समस्या को यथार्थ रूप में चित्रित किया है । कहानी की नायिका मीरा अपने पति नरेश से बहुत प्यार करती है । नरेश को ताश के खेल में बहुत दिलचस्पी है, मीरा को भी वह ब्रिज का खेल सिखाने के लिए हमेशा अपने साथ ले जाता है । लेकिन मीरा ब्रिज नहीं सीख पाती । कभी ब्रिज के खेल में नरेश हार जाता है, तो उसका सारा गुस्सा घर आकर वह मीरा के शरीर पर उतारता है । एक दिन जब वह ब्रिज में हार जाता है, तो घर आने के बाद उसके बरताव का वर्णन करते हुए मीरा कहती है, '' यह कहकर वह भूखे भेडिये की तरह मुझ पर टूट पड़ा । बिस्तर पर मेरी देह अभी तक वैसी ही नग्न पड़ी थी । जैसी वह छोड़कर गया था । अपनी हार का तमाम गुस्सा उसने उस पर उतारा । उसके नाखूनों और दांतों के निशान मेरे ओठों, कन्धों, वक्ष और पीठ पर उभर आये ।''[38] इस तरह आज नारी को यौन शोषण की समस्या का अधिक सामना करना पड़ रहा है । इस समस्या को अपनी कुछ कहानियों में मृदुला गर्ग ने स्थान दिया है ।

5.2.14 अवैध यौन संबंध की समस्या -

अवैध यौन संबंध वेश्यावृत्ति का ही दूसरा रूप है । '' काम जीवन की एक सहजात प्रवृत्ति है । मनुष्य- तो- मनुष्य पशु - पक्षियों में भी यह प्रवृत्ति पाई जाती है । जैसे पेट की भूख जन्मजात है वैसे सेक्स भी जन्मजात है । पेट की भूख की तृप्ति जैसे अनिवार्य है वैसे ही सेक्स की तृप्ति भी अनिवार्य है । सेक्स की अतृप्ति जीवन में समस्याएँ खड़ी कर सकती हैं । वह जीवन के विकास में बाधा स्वरूप हेाती है । इससे मनुष्य के मानसिक तथा शारीरिक विकास पर भी कुप्रभाव पड़ता है ।'' [39] भारतीय नारी के लिए सबसे बड़ा नैतिक बंधन है यौन पवित्रता । नारी स्वेच्छा से भी यौन संबंध रखती तो भी और उसकी स्वीकृति के बिना संबंध रखने से भी समस्याएँ निर्माण होती हैं ।

' अदृश्य ' कहानी में वीना के पति देवेन से अपर्णा अवैध यौन संबंध रखती है । इस कारण वीना की तरफ देवेन का ध्यान कम होता जाता है । वह वीना की अपेक्षा अपर्णा की तरफ ही अधिक आकर्षित होता है । इसलिए मृदुला गर्ग कहानी में कहती हैं, '' आँखों पर पड़ा नकाब एक झटके के साथ दूर उड़ गया धा और अपर्णा उसके सामने थी । उसे देखा था और महसूस किया था; दिलोदिमाग से न सही, देह की तमाम इंद्रियों से । देखा था; उसे सुना था, सुंघा था, छुआ था और स्वाद लिया था उसका ।'' [40] देवेन और अपर्णा के अवैध यौन संबंध इतने बढ़ जाते है कि, वह देवेन के बच्चे की माँ

बनने वाली है । इसलिए वह देवेन से शादी करने के लिए वीना को तलाक देने को कहती है । देवेन वीना को तलाक देकर अपर्णा से शादी करने से इंकार कर देता है । तब अपर्णा वीना पर हमला करवाती है और उसमें वीना की मृत्यु हो जाती है । देवेन वीणा से इतना दूर जा चुका है कि, जो घायल औरत वह अपने क्लीनिक में ले आता है, वह उसकी पत्नी वीना ही हैं । इस बात का पता उसे नहीं चलता । इस तरह अवैध यौन संबंध एक बहुत बड़ी समस्या का रूप ले रहा है । देवेन जब वीना को छोड़कर अपर्णा को अपनाता है, तब वीना भी अपने अनेक मित्रों के साथ न चाहते हुए भी संबंध रखती है ।

निष्कर्ष -

नारी मन की पीड़ा, यातना, सुख-दु:ख को एक नारी जितना समझती है उतना पुरुष नहीं समझ सकता । नारी होने के नाते वह नारी की समस्याओं को समझ सकती है । मृदुला गर्ग भी ऐसी ही लेखिका हैं जिन्होंने नारी मन की व्यथा को समझकर उसकी बहुतांश समस्याओं का चित्रण अपनी कहानियों के माध्यम से करने का प्रयास किया है ।

समय के साथ-साथ परिस्थितियाँ बदलती हैं, और उन्हीं के साथ समाज तथा नारी का रूप भी बदलता जाता है । इसके साथ ही समस्याओं का रूप भी बदल जाता है । लेकिन इसमें पहले भी नारी का शोषण होता था और आज भी नारी का ही शोषण होता रहा है । नारी की समस्याएँ उसकी अपनी मजबूरी, अपने विचार, परिस्थितियों के कारण तथा समाज की विकृत मानसिकता, अंधविश्वास आदि के कारण निर्माण हुई हैं । इन समस्याओं का चित्रण लेखिका ने किया है ।

आज परिवार के हर व्यक्ति के बीच दूरियाँ आ गई हैं, जिसके कारण संबंध दरकने लगे हैं। ऐसे ही पारिवारिक विघटन का चित्रण मृदुला गर्ग ने अपनी ' अक्स ' इस कहानी में किया है । आज की पढ़ी-लिखी नारी नौकरी करती है, तब उसे बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है । ऐसी ही कामकाजी नारियों की अनेकविध समस्याओं को मृदुला गर्ग ने ' चक्करघिन्नी ', ' खाली ' आदि कहानियों में चित्रित किया है ।

वर्तमानकालीन परिवेश में अशिक्षित होते हुए भी नारी को समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं, और शिक्षित होकर भी समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं । ' अनाड़ी ' इस कहानी में अशिक्षित नारी की समस्या को चित्रित किया है, तथा ' वह मैं ही थी ', ' ग्लेशियर से ', ' खरीदार ' आदि कहानियों के माध्यम से शिक्षित नारी की समस्या को प्रभावी रूप से चित्रित किया है। सगे-संबंधियों के होते हुए भी मनुष्य कभी-कभी अकेलापन महसूस करता है । घुटन और अकेलेपन की इसी समस्या को मृदुला गर्ग

ने ' रेशम ', ' विलोम ', ' अक्स ', ' झूलती कुर्सी ', ' खाली ' आदि अनेक कहानियों में चित्रित किया है ।

वर्तमान युग में विवाह एक निरर्थक बंधन के रूप में मानने की प्रवृत्ति समाज में पनप रही है । इस समस्या का चित्रण ' अक्स ', ' तुक ', ' ग्लेशियर से ' आदि कहानियों में पाया जाता है । नारी आज पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में काम कर रही है, लेकिन फिर भी आज भी उसका जन्म पाप समझा जाता है । ' तीन किलो की छोरी ' इस कहानी में इसी समस्या का चित्रण दिखाई देता है । जिस तरह कन्या जन्म के लिए नारी को ही दोषी माना जाता है, उसी तरह संतान न होन के लिए भी नारी को ही दोषी माना जाता है । नारी के जीवन की इसी विडंबना को मृदुला गर्ग ने ' बाहरी जन ' कहानी में चित्रित किया है ।

' खरीदार ' कहानी के माध्यम से दहेज की समस्या का चित्रण मृदुला गर्ग ने किया है । पति-पत्नी के बीच असामंजस्य के कारण पीड़ित पत्नियों का चित्रण ' तीन किलो की छोरी ', ' रेशम ' आदि कहानियों में किया है । अर्थाभाव के कारण स्त्री को भी बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है । इस आर्थिक समस्या को ' तीन किलो की छोरी ', ' अनाडी ', ' संगत ', ' वह मैं ही थी ' आदि कहानियों में मृदुला गर्ग ने प्रभावी रूप से चित्रित किया है ।

देहातों में वैद्यकीय सुविधा न होने के कारण स्त्री को बच्चे को जन्म देते वक्त बहुत-ही कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ता है । कभी-कभी ऐसी स्थिति में उसके प्राण भी चले जाते हैं । इस समस्या को ' तीन किलो की छोरी ', ' वह मैं ही थी ' कहानियों में चित्रित किया है ।

मृदुला गर्ग ने इन सभी समस्याओं के साथ प्रेम में असफल युवतियों का चित्रण ' विलोम ', ' झुलती कुर्सी ' होना आदि कहानियों में किया है । इसके साथ ही यौन शोषण की समस्या को ' तुक ' कहानी में तथा अवैध यौन संबंधों को ' अदृश्य ' कहानी में चित्रित किया है ।

मृदुला गर्ग ने नारी जीवन से संबंधित अधिकांश समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है । उनकी 'टोपी', 'उलटी धारा', 'प्रतिध्वनि', 'संज्ञा', 'सार्त्र कहता है', 'अन्धकूप में चिराग', 'गूँगा कवि' आदि कहानियों में नारी जीवन से संबंधित किसी भी समस्या का चित्रण दिखाई नहीं देता ।

संदर्भ सूची -

1. किरणबाला अरोड़ा, साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में नारी, पृ. 244
2. स. विपिन बिहारी ठाकुर, 'प्रकर' (मासिक) मार्च ९२, पृ. 34
3. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 40
4. वही, पृ. 53
5. वही, पृ. 57
6. वही, ग्लेशियर से, पृ. 137
7. वही, शहर के नाम, पृ. 45
8. वही, पृ. 68
9. वही, ग्लेशियर से, पृ. 12
10. इंद्रनाथ मदान, आधुनिकता और हिंदी साहित्य, पृ. 74
11. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 84
12. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 94
13. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 40
14. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से, पृ. 130
15. प्रेमचंद, वरदान, पृ. 33
16. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 39
17. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से, पृ. 50
18. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से, पृ. 12
19. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 22
20. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 65
21. शीलप्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ पृ. 55
22. मृदुला गर्ग, ग्लेशियर से, पृ. 83
23. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियाँ, पृ. 18
24. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 20
25. वही, पृ. 13

26.	वही,		पृ. 83
27.	महादेवी वर्मा,	श्रृंखला की कडियाँ,	पृ. 115
28.	मृदुला गर्ग,	शहर के नाम,	पृ. 25
29.	वही,		पृ. 45
30.	वही,		पृ. 71
31.	वही,		पृ. 69
32.	वही,		पृ. 70
33.	डॉ. देवराज	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन,	पृ. 353
34.	मृदुला गर्ग,	शहर के नाम,	पृ. 96
35.	मृदुला गर्ग,	ग्लेशियर से,	पृ. 34
36.	वही,		पृ. 64
37.	रेखा राजवंशी,	गृहशोभा(मासिक), सं. प्र. विश्वनाथ, जनवरी, 1999	पृ. 56
38.	मृदुला गर्ग,	ग्लेशियर से,	पृ. 56
39.	डॉ. योगेश सुरी,	यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ,	पृ. 121
40.	मृदुला गर्ग,	ग्लेशियर से,	पृ. 155